असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं की समस्याएँ

रीता कुमारी*

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् महिलाओं के सामने अनेकों समस्याएँ है। जो इस प्रकार है कि दोहरे कार्य के साथ बच्चों व घर के अन्य सदस्यों की देखभाल और कार्य स्थल व घर के कार्यों में समायोजन करना, यह उनके लिए बड़ी समस्या होती है। जिसे वह किस तरह अपनी सुझ–बुझ से सुलझा पाती है।

दोहरे काम की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत् कामकाजी महिलाओं को अपनी नौकरी से संबंधित कार्यों के अतिरिक्त भी परिवार के अधिकतर कार्यो को पूर्ण करना पड़ता है। इस प्रकार उन महिलाओं पर कार्य का दोहरा उत्तरदायित्व आ जाता है। इसका उनके स्वास्थ्य और मानसिक सन्तुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और महिलाओं का कथन था कि आर्थिक उत्पादन उनकी मजबूरी है अतः वे कार्य करती है पर वे अपनी दोहरी जिम्मेदारी से सन्तुष्ट नहीं है चूंकि परिवार एकांकी है और कोई सदस्य मदद के लिये नहीं है। अतः कार्य के साथ घर का काम करके में काफी असुविधा का अनुभव होता है।

कम मजदूरी की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में महिलाओं को केवल कुछ चुने हुए, कार्यों में ही रोजगार के अवसर मिलते है। जैसेः– परिचर्या खेती, बागवानी, हस्तशिल्प, लघु उद्योग, चीनी मिट्टी तथा कार्यालयों से संबंधित कार्य। इन सीमित व्यवसायों में रोजगार की इच्छुक महिलाओं की संख्या अधिक होती है।

अर्थशास्त्र का नियम है कि मांग कम व पूर्ति अधिक होने से वस्तु का मूल्य गिरने लगता है। इसका प्रभाव यहाँ भी दिखाई देता है। इस क्षेत्र में व्यवसायों की कमी व काम करने वालों की संख्या अधिक होने के कारण, महिलाओं को कम मजदूरी की समस्या का भी सामना करना पड़ता है।

दोयम स्थिति की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को दोहरे माप दण्ड की समस्या से भी रूबरू होना पड़ता है। कई नियोजक प्रसूति की स्थिति में छुट्टी तथा प्रसूति–हितलाभ, शिशु गृह की स्थापना की अनिवार्यता तथा महिलाओं को रात्रिकार्य और खतरनाक कामों पर कानूनी प्रतिबन्धों के कारण महिलाओं को नियोजित नहीं करना चाहते। इन कारणों के अतिरिक्त भारत पुरुष प्रधान समाज वाला देश है। जिसकी झलक इस समस्या पर भी दिखाई देती है। असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं भी इस दोयम दर्जे की सामाजिक स्थिति का शिकार है। उन्हें समान कार्य व समान घण्टे कार्य करने के बाद भी, इसी मानसिकता के कारण पुरुषों की तुलना में कम वेतन दिया जाता है। सार्वजनिक वित्त एवं नीति संस्थान के एक अध्ययन में दिखाया गया है कि पुरुषों की औसत मजदूरी स्त्रियों की औसत मजदूरी शहरी क्षेत्रों में 80ः तथा ग्रामीण क्षेत्रों 60ः ही रही है।

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को अपनी कार्य क्षमता के अनुपात से अधिक कठिन कार्यों का भी निर्वाह करना पड़ता है। विशेषकर शारीरिक कार्य वाले नियोजनों में लगातार कई घण्टों तक काम करना पड़ता है। कई कारखानों में उन्हें खतरनाक मशीनों या प्रक्रियाओं में भी नियोजित किया जाता है।

कार्य स्थल पर उन्हें विश्राम के अभाव, अपर्याप्त प्रकाश और असुरक्षा, व्यावसयिक रोग, दुर्घटना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

स्त्री के स्त्रीत्व की समस्या :– कार्यशील महिलाओं को स्त्रीत्व की स्थिति में कुछ विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें प्रसूति की अवधि में छुट्टी वेतन या प्रसुति–हितलाभ की आवश्यकता होती है कई नियोजक गर्भवति अवस्था में महिला श्रमिकों को काम से हटा देते है और उन्हें इस अवधि में मजदूरी भी नहीं देते है। कई प्रतिष्ठानों में उन्हें गर्भावस्था में किसी प्रकार की चिकित्सा सुविधा भी नहीं मिल पाती है।

स्वयं की सुरक्षा की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को अपनी सुरक्षा से संबंधित समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। क्योंकि कामकाजी होने के कारण महिलाओं को अपने कार्य पर अकेले ही जाना पड़ता है। कई संस्थानों में नियोजकों द्वारा कामकाजी महिलाओं को सुविधायें न देना, उनका शोषण करना, कम वेतन देना जैसी समस्यायें आज समाज में व्याप्त है। जिस संस्था के लिये वे कार्य करती है, उन नियोजकों द्वारा प्रायः उन्हें सुरक्षा उपलब्ध नहीं कराई जाती। जिससे उन्हें सुरक्षा संबंधित कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कृषि का पिछड़ापन :– आज भी भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि के पिछड़ेपन के कारण लोगों के उपयोग के लिए खाद्यानों तथा पोषक पदार्थो की कमी आज भी बनी हुई है। इन्हीं कारणों से ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता की समस्या गंभीर हैं।

कार्यक्षेत्र में स्त्रियों को मिलने वाली सुविधाओं की कमी की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के सामने वित्त की समस्या की समस्या तो है, ग्वालियर में बहुत सी गैर सरकारी संगठन है। जिनके माध्यम से महिलाएँ काम कर रही हैं जिनमें कार्यरत महिलाओं को वेतन के लिए पर्याप्त धन नहीं होता है। जिससे उन्हें कम वेतन पर ही कार्य करना पड़ता है। जिससे इन असंगठित

***शोधार्थी गृह विज्ञान विभाग, बी0 एन0 एम0 यू0, मधेपुरा**

क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं को सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बिना वित्त आपके कितनी भी योग्यता रखे, आप में कोई मूल्य नहीं है, आधुनिक समय में लोग पैसा को ही सब कुछ मानते है।

खास–तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों पर काफी समस्या की स्थिति देखने को मिलती है। बिना पैसे के लोगों को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती है। इस प्रकार समस्या से लड़ने के लिए मेहनत जरूरी है।

बच्चों के पालन–पोषण की समस्या :– असंगठित क्षेत्र में कार्यशील महिलाओं के सामने बच्चों के पालन–पोषण की समस्या बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या होती है। पेशेवर जीवन में आगे बढ़ने की राह में महिलाओं के सामने तब बड़ी समस्या आती है, जब उन्हें अपनी कामकाजी भूमिका के साथ–साथ मातृत्व का दायित्व भी निभाना पड़ता है। कुदरत ने उन्हें माँ के रूप में जो खास जिम्मेदारी सौंपी हे, उसे पूरा करने के लिए अक्सर महिलाओं को अपनी सामाजिक जिंदगी की कुर्बानी देनी पड़ती है। उनका मानना है कि अपने कार्य के साथ, पारिवारिक एवं सामाजिक, दायित्वों का निर्वाह उनकी नैतिक जिम्मेदारी है, इसमें बच्चों के बीमार होने पर उनकी देखभाल उनका दायित्व है व इसका निर्वाह वे खुशी से करती है और वे बच्चों की पढ़ाई के प्रति सजग है, वे अपनी इस जिम्मेदारी को बखुबी पूरा भी करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. World Bank Report: 6 April 2009, Hindustan Times New Delhi Comparative study of Working Women P-11.
2. Pappola T.S. (1982): Woman works in an urban Labour Market: A study of Segeration and discrimation in employment Lucknow Publication P-116.
3. Shardamani. K (1985): Progressive Land Legislation and subordination of woman, Criterian Publication, New Delhi P-163
4. Kapoor Pramila (1968): The Study of Martial Adjustment of educated working women in India, Agra Publication.
5. Desai Neera (1975): Women in Morden India, Bora Publication Mumbai P- 253.
6. Dube L. & Patriwala. R (1990): Structural and strategies: Women work and family Sage New Delhi Publication.
7. Mather Deepa (1992): Women, Family and Work, Rawat Publication, Jaipur.
8. Srivastave Sudhir Kumar (1985):Women Empowerment: Mcgraw Hill Publication, New Delhi

*****

प्राचीन काल के प्रमुख सांगितिक ग्रंथों में संगीत

नमिता कुमारी*

भारत में संगीत कला अराधना प्रागैतिहासिक काल से आज तक चली आ रही है। वैदिक काल में संगीत का शैशव काल था, परंतु संगीत के आधारभूत नियमों को वैदिक काल में ऋषियों ने खोज निकाला था। पुराणों के काल में हमारा संगीत किशोरावस्था में पहुँच गया। संगीत एक स्वतंत्र शास्त्र बन गया । वाल्मीकि रामायण, महाभारत के काल तक हमारे संगीत का पर्याप्त विकास हो चुका था किन्तु उस विकसित संगीत का कोई भी शास्त्र उपलब्ध नहीं होता। गान्धर्व वेद का उल्लेख तो अवश्य मिलता है, किन्तु इसका निर्माण कब हुआ इसका संकेत नहीं मिलता है। प्राचीन समय के भारतीय संगीत का यदि कोई भी शास्त्र उपलब्ध है तो भरत का नाट्यशास्त्र। इसलिए यहाँ सर्वप्रथम नाट्यशास्त्र के विषय में जानना आवश्यक है।

नाट्यशास्त्र :– भारतीय मतानुसार भरत का नाट्यशास्त्र ही वह प्रथम ग्रंथ है,जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आकलन के उपरांत उसके शास्त्ररीय पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। नाट्यशास्त्र के जनक 'भरतमुनि' को ही स्थान प्राप्त है जिन्हें संगीत का आदिपुरुष कहा गया है। भरत कृत नाट्यशास्त्र भारतीय साहित्य तथा संगीत का विशद भंडार है।

भरतकृत नाट्यशास्त्र को योगशास्त्र अथवा मोक्ष शास्त्र भी कहा जाता है। श्रुतियों के वैज्ञानिक सूक्ष्म विवेचना के कारण यह नाट्यशास्त्र है। नाद एवं नृत्य का संबंध योगशास्त्र से बताने के कारण इसे योगशास्त्र कहा गया है तथा मोक्षशास्त्र इसलिए है कि क्योंकि इसमें मोक्षप्राप्ति के साधन संगीत एवं नृत्यकला का सुंदर संयोग निर्दिष्ट किया गया है। रस, छंद, भाषा, वेशभूषा, अभिनय, संगीत तथा नृत्य सभी विषयों का विवरण नाट्यशास्त्र में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त गायक तथा वादक के गुण–अवगुण की चर्चा भी की गयी है। नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्यकला बहुत प्राचीन काल से सिद्ध है। नाट्यशास्त्र में इस कला को ब्रह्मा से उद्धत माना गया है तथा उसके पुराने अनुयायी भरत बताए गए हैं।

***शोध छात्रा वि0 वि0 संगीत एवं नाट्य विभाग ल0 न0 मि0 वि0 वि0 दरभंगा**